2026 Volume: 02 Issue: 08 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-08

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मातृभाषा में शिक्षा का महत्व

***प्रो. छत्रसाल सिंह**

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

Article Received: 06 July 2026
Article Revised: 26 July 2026
Published on: 13 August 2026

***Corresponding Author: प्रो. छत्रसाल सिंह**

आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.2672

भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक एवं परिवर्तनकारी सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, बहुभाषिक, कौशलोन्मुख तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख पक्ष प्रारम्भिक एवं प्राथमिक स्तर पर बालकों की गृहभाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रोत्साहित करना है। नीति के अनुसार, जहाँ तक संभव हो, कम-से-कम कक्षा 5 तक तथा अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक शिक्षण का माध्यम बालक की गृहभाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए।

मातृभाषा बालक के विचार, अनुभव, भावनाओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। इसलिए मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बालक विषय-वस्तु को अधिक सहजता से समझता है, अपनी बात आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करता है तथा ज्ञान को अपने जीवनानुभवों से जोड़ पाता है। मातृभाषा आधारित शिक्षा बालकों के संज्ञानात्मक विकास, सृजनात्मकता, तार्किक चिंतन, शैक्षिक उपलब्धि तथा सांस्कृतिक पहचान के विकास में सहायक होती है। वर्तमान शोध-पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मातृभाषा में शिक्षा की अवधारणा, आवश्यकता, शैक्षिक महत्व, प्रमुख लाभ, व्यावहारिक चुनौतियों तथा प्रभावी क्रियान्वयन के उपायों का विश्लेषण किया गया है।

प्रमुख शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मातृभाषा, गृहभाषा, स्थानीय भाषा, बहुभाषिकता, प्रारम्भिक शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना

भाषा मानव के विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा ज्ञान को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम है। बालक जन्म के पश्चात अपने परिवार एवं सामाजिक परिवेश से जिस भाषा को स्वाभाविक रूप से सीखता है, वह उसकी मातृभाषा अथवा गृहभाषा कहलाती है। बालक अपने प्रारम्भिक अनुभवों, भावनाओं तथा सामाजिक संबंधों को सामान्यतः इसी भाषा के माध्यम से समझता और व्यक्त करता है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया में मातृभाषा का विशेष महत्व है।

भारत एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ तथा स्थानीय भाषिक परम्पराएँ विद्यमान हैं। इस भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में किसी एक भाषा को ही प्रमुखता देने के स्थान पर विद्यार्थियों की भाषिक पृष्ठभूमि का सम्मान करना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन तथा शिक्षा में उनके प्रभावी उपयोग पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषिकता को शिक्षा की एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रारम्भिक वर्षों में बालक अपनी गृहभाषा अथवा मातृभाषा के माध्यम से जटिल अवधारणाओं को अधिक सरलता से समझ सकता है। इसी कारण नीति में जहाँ तक संभव हो, कक्षा 5 तक तथा अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक मातृभाषा, गृहभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रोत्साहित किया गया है।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को अनुमोदित किया गया। इस नीति का उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, समानतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण, लचीला तथा ज्ञान-आधारित बनाना है। नीति में शिक्षा के सभी स्तरों—प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा—में व्यापक सुधारों का प्रस्ताव किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. शिक्षा की नवीन **5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शैक्षणिक संरचना**।
2. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा को महत्व।
3. आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान पर विशेष बल।
4. रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर समझ, अनुभव तथा कौशल आधारित अधिगम को प्रोत्साहन।
5. विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल।
6. कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा व्यावसायिक शिक्षा के बीच कठोर विभाजन को कम करना।

7. बहुभाषिकता एवं भारतीय भाषाओं के संरक्षण को प्रोत्साहन।
8. मातृभाषा, गृहभाषा, स्थानीय भाषा तथा क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा।
9. शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
10. समावेशी एवं समान अवसरों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था का विकास।

3. मातृभाषा की अवधारणा

मातृभाषा सामान्यतः वह भाषा है जिसे बालक अपने परिवार अथवा निकट सामाजिक परिवेश से सबसे पहले सीखता है। यह भाषा बालक के विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा सांस्कृतिक पहचान से गहराई से जुड़ी होती है। मातृभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का भी आधार होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में "मातृभाषा" के साथ "गृहभाषा", "स्थानीय भाषा" तथा "क्षेत्रीय भाषा" जैसे शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। अनेक परिस्थितियों में बालक की गृहभाषा, मातृभाषा तथा विद्यालय की क्षेत्रीय भाषा एक ही हो सकती है; किन्तु बहुभाषी परिवारों एवं क्षेत्रों में इनमें अंतर भी हो सकता है। नीति का मुख्य उद्देश्य बालक को ऐसी परिचित भाषा में शिक्षा प्रदान करना है, जिसके माध्यम से वह विषय-वस्तु को सहजता से समझ सके।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा का स्थान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा को ज्ञान के अर्जन, अभिव्यक्ति तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है। नीति के अनुसार, प्रारम्भिक आयु में बालक अपनी परिचित भाषा में अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है। इसलिए विद्यालयी शिक्षा के प्रारम्भिक चरण में मातृभाषा अथवा गृहभाषा को प्राथमिकता देने की अनुशंसा की गई है।

नीति के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं—

1. जहाँ तक संभव हो, कम-से-कम कक्षा 5 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, गृहभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए।
2. अधिमानतः कक्षा 8 तथा उससे आगे तक भी स्थानीय अथवा मातृभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
3. मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों तथा शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास किया जाना चाहिए।

4. विज्ञान एवं गणित जैसे विषयों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली द्विभाषिक पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण सामग्री के निर्माण पर बल दिया गया है।

5. बहुभाषिकता को विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक एवं सामाजिक क्षमता के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है।

6. त्रिभाषा सूत्र में अधिक लचीलापन प्रदान किया गया है तथा किसी राज्य अथवा विद्यार्थी पर किसी भाषा को थोपने की बात नहीं की गई है।

5. मातृभाषा में शिक्षा का शैक्षिक महत्व

5.1 अवधारणाओं की सहज समझ

बालक अपनी मातृभाषा में पढ़ाए गए विषयों को अधिक सरलता से समझता है। जब शिक्षण की भाषा बालक के दैनिक जीवन एवं अनुभवों से जुड़ी होती है, तब उसे शब्दों के अर्थ समझने में कम कठिनाई होती है। इससे वह विषय-वस्तु पर अधिक ध्यान दे पाता है।

5.2 संज्ञानात्मक विकास

मातृभाषा में शिक्षा बालक के मानसिक एवं बौद्धिक विकास में सहायक होती है। परिचित भाषा के माध्यम से बालक प्रश्न पूछता है, तर्क करता है तथा नई अवधारणाओं को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़ता है। इससे विश्लेषणात्मक एवं तार्किक चिंतन का विकास होता है।

5.3 शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि

जब विद्यार्थी शिक्षण की भाषा को समझता है, तब वह पाठ्यवस्तु को अधिक प्रभावी ढंग से ग्रहण कर पाता है। इससे उसकी कक्षा में सहभागिता, सीखने की रुचि तथा शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हो सकती है। भाषा संबंधी कठिनाई कम होने पर विद्यार्थी विषय की वास्तविक अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित कर पाता है।

5.4 अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास का विकास

मातृभाषा में विद्यार्थी अपने विचारों, प्रश्नों एवं अनुभवों को अधिक स्वतंत्रता से व्यक्त कर सकता है। इससे कक्षा में उसकी सहभागिता बढ़ती है तथा उसमें आत्मविश्वास का विकास होता है। विद्यार्थी शिक्षक से संवाद करने और अपनी शंकाओं को प्रस्तुत करने में अधिक सहज अनुभव करता है।

5.5 सृजनात्मकता एवं आलोचनात्मक चिंतन

परिचित भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से सोचने तथा नवीन विचार प्रस्तुत करने में सक्षम होता है। मातृभाषा के माध्यम से वह किसी विषय का केवल स्मरण नहीं करता, बल्कि उसके अर्थ, कारण एवं प्रभाव का विश्लेषण भी कर सकता है।

5.6 सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण

भाषा किसी समाज की संस्कृति, परम्पराओं, लोकज्ञान, साहित्य तथा जीवन-मूल्यों की वाहक होती है। मातृभाषा में शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है तथा उनमें अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करती है।

5.7 सामाजिक समावेशन को बढ़ावा

मातृभाषा आधारित शिक्षा ग्रामीण, जनजातीय, अल्पसंख्यक तथा भाषाई रूप से वंचित समुदायों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ बना सकती है। इससे भाषा के कारण उत्पन्न शैक्षिक असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है।

5.8 विद्यालय में नामांकन एवं निरंतरता

यदि बालक विद्यालय में ऐसी भाषा का सामना करता है जिसे वह समझ नहीं पाता, तो उसके लिए सीखना कठिन एवं तनावपूर्ण हो सकता है। इसके विपरीत, परिचित भाषा में शिक्षण से विद्यालय के प्रति अपनापन एवं रुचि विकसित होती है। इससे विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति तथा विद्यालय में निरंतरता को बढ़ावा मिल सकता है।

6. मातृभाषा एवं बहुभाषिक शिक्षा

मातृभाषा में शिक्षा का अर्थ अन्य भाषाओं की उपेक्षा करना नहीं है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मातृभाषा के साथ बहुभाषिकता को भी प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य यह है कि बालक अपनी परिचित भाषा में मजबूत शैक्षिक आधार विकसित करे और साथ ही क्रमशः अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त करे।

बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी—

1. अपनी मातृभाषा में विषय-वस्तु को समझ सकता है।
2. क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर संवाद के लिए अन्य भारतीय भाषाएँ सीख सकता है।
3. वैश्विक ज्ञान एवं अवसरों तक पहुँच के लिए अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
4. विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों के प्रति सम्मान विकसित कर सकता है।

इस प्रकार मातृभाषा एवं अन्य भाषाओं को प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक रूप में देखा जाना चाहिए।

7. मातृभाषा में शिक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि मातृभाषा आधारित शिक्षा के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं—

7.1 बहुभाषिक एवं बहुबोलीय परिस्थितियाँ

भारत के अनेक क्षेत्रों में एक ही कक्षा में विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। ऐसी स्थिति में किसी एक भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाना कठिन हो सकता है।

7.2 गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों की कमी

अनेक स्थानीय एवं जनजातीय भाषाओं में विज्ञान, गणित तथा अन्य विषयों की पर्याप्त एवं गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। इस कारण मातृभाषा आधारित शिक्षा का प्रभावी संचालन कठिन हो सकता है।

7.3 प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव

मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में शिक्षण करने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण चुनौती है। शिक्षकों को बहुभाषिक शिक्षण, द्विभाषिक सामग्री तथा स्थानीय संदर्भों के उपयोग का प्रशिक्षण आवश्यक है।

7.4 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली

उच्च स्तर के विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी तथा व्यावसायिक विषयों के लिए सरल, मानकीकृत एवं प्रचलित शब्दावली विकसित करना आवश्यक है।

7.5 अंग्रेजी माध्यम के प्रति सामाजिक आकर्षण

अनेक अभिभावक अंग्रेजी को उच्च शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ते हैं। इसलिए वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ाना पसंद करते हैं। मातृभाषा आधारित शिक्षा को सफल बनाने के लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

7.6 डिजिटल सामग्री की सीमित उपलब्धता

अनेक भारतीय भाषाओं एवं बोलियों में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री, ई-पुस्तकें, शैक्षिक वीडियो तथा ऑनलाइन संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं।

8. मातृभाषा आधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव

मातृभाषा आधारित शिक्षा को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं—

1. स्थानीय एवं मातृभाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों का विकास किया जाए।

2. विज्ञान, गणित तथा प्रौद्योगिकी विषयों के लिए सरल एवं मानकीकृत शब्दावली तैयार की जाए।
3. शिक्षकों को बहुभाषिक एवं द्विभाषिक शिक्षण पद्धतियों का प्रशिक्षण दिया जाए।
4. स्थानीय भाषा एवं संस्कृति से परिचित शिक्षकों की नियुक्ति को प्रोत्साहित किया जाए।
5. स्थानीय भाषाओं में ई-पुस्तकें, डिजिटल सामग्री, शैक्षिक वीडियो तथा अन्य तकनीकी संसाधन विकसित किए जाएँ।
6. स्थानीय साहित्यकारों, भाषाविदों, शिक्षाविदों तथा समुदाय के ज्ञानवान व्यक्तियों को पाठ्यसामग्री निर्माण से जोड़ा जाए।
7. प्रारम्भिक स्तर पर मातृभाषा के साथ क्रमिक रूप से क्षेत्रीय भाषा, हिंदी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं का परिचय कराया जाए।
8. अभिभावकों को मातृभाषा आधारित शिक्षा के शैक्षिक लाभों के बारे में जागरूक किया जाए।
9. जनजातीय एवं अल्पसंख्यक भाषाओं के संरक्षण तथा शिक्षा में उनके उपयोग के लिए विशेष योजनाएँ विकसित की जाएँ।
10. शिक्षा में अनुवाद तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल भाषायी उपकरणों का उपयोग किया जाए।

9. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, बहुभाषिक तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। मातृभाषा में शिक्षा का प्रावधान इस नीति की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। मातृभाषा बालक के अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ी होती है। इसलिए मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने पर बालक विषय-वस्तु को अधिक सहजता से समझ सकता है तथा अपनी अभिव्यक्ति, तर्कशक्ति, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास का विकास कर सकता है।

मातृभाषा आधारित शिक्षा शैक्षिक उपलब्धि में सुधार, सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण तथा सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में सहायक हो सकती है। साथ ही, मातृभाषा में शिक्षा का अर्थ अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं का विरोध नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में मजबूत बौद्धिक आधार प्रदान करते हुए अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का ज्ञान भी उपलब्ध कराना होना चाहिए।

मातृभाषा आधारित शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए गुणवत्तापूर्ण पाठ्यसामग्री, प्रशिक्षित शिक्षक, उपयुक्त शब्दावली, डिजिटल संसाधन तथा समुदाय की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप यदि मातृभाषा एवं बहुभाषिक शिक्षा को संतुलित और योजनाबद्ध

रूप से लागू किया जाता है, तो यह शिक्षा को अधिक सरल, सार्थक, समावेशी तथा प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रमुख विशेषताएँ*।
3. भारत सरकार। (2023)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा : विद्यालयी शिक्षा*। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (विभिन्न वर्ष)। *विद्यालयी शिक्षा एवं भाषा शिक्षण संबंधी प्रकाशन*। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
5. अग्रवाल, जे. सी. (विभिन्न संस्करण)। *भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ*। नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो।
6. भटनागर, आर. पी. एवं अग्रवाल, आर. (विभिन्न संस्करण)। *शैक्षिक प्रशासन एवं शिक्षा की समकालीन समस्याएँ*।
7. शर्मा, आर. ए. (विभिन्न संस्करण)। *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*।
8. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आधिकारिक दस्तावेज*। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020—आधिकारिक दस्तावेज
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ*। शिक्षा मंत्रालय का आधिकारिक पृष्ठ
10. भारत सरकार, लोकसभा। (2026)। *मातृभाषा आधारित शिक्षा के क्रियान्वयन से संबंधित उत्तर*।